मिशन जंगल और गिनीपिग

क्रम

खेल	07
बबली यहीं रहती है	17
बीस सौ इक्यावन का एक दिन	36
मिशन जंगल और गिनीपिग	45
ये बेटियाँ	58
कूये यार में	68
अलख	79
घर चलते हैं डार्लिंग	87
लाइन ऑफ कन्ट्रोल	99
...बेताबियों का नाम इन्सां हो गया	109
डाल से टूटे पत्ते	127
समय चक्र	139

मिशन जंगल और गिनीपिग
ज़िंदगी के टुकड़े और एक टुकड़ा ज़िंदगी

वरिष्ठ कथाकार नमिता सिंह के कहानी संग्रह 'मिशन जंगल और गिनी पिग' की कहानियों का दायरा व्यापक और वैविध्यपूर्ण है। इन कहानियों में पाठक को शुरू से आख़िर तक बाँधे रखने की कला-क्षमता है। इन्हें मुख्यतः तीन खण्डों में बांटा जा सकता है। जैसे फंतासी के आधार पर रची गई 'फ्यूचरिस्टिक' दुनिया की कहानियाँ, स्त्री चरित्रों को केन्द्र में रखकर लिखी गई बदलाव को रेखांकित करने वाली कहानियाँ और सरल फार्मूले के इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियाँ।

इस संग्रह की प्रभावशाली कहानियों में से एक है 'बबली यहीं रहती है'। यद्यपि इसमें तीन स्त्री पात्र हैं, फिर भी यह स्त्री-विमर्श की कहानी नहीं है। बल्कि स्त्री-विमर्श की नुक्ताचीनी करने वाली कहानी है। यह कहानी पुरुष और पुरुषवादी संपूर्ण समाज को खलनायक में तब्दील करने वाले मिथकों को तोड़ने वाली कहानी है। कहानी के केंद्र में एक ऐसी स्त्री है जो अपनी बहन की समृद्धि से प्रतिस्पर्द्धा करने के प्रयास में अपने सुखद जीवन को नकार देती है। संवेदनशील प्रोफ़ेसर पति को खलनायक बना डालती है। प्रकारांतर से यह कहानी स्त्री-विमर्शवादी कहानियों की उस रुढ़ि को प्रश्नांकित करती है जो पितृसत्ता की आलोचना के नाम पर स्त्री-पुरुष के बीच शत्रुतापूर्ण संबंध का आख्यान रचती है और उपभोक्तावादी संस्कृति के स्त्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव को नज़रअंदाज करती है।

मानवीय रिश्तों के बारीक तंतुओं को 'ये बेटियाँ' और 'लाइन आफ कन्ट्रोल' कहानियों में बुना गया है। ये माँ-दादी की पीढ़ियों की रूढ़ियों को नकारने वाली और खुले आकाश में उड़ने की तमन्ना रखने वाली बेटियों की कहानियाँ हैं। 'ये बेटियाँ' की लल्ली एक छोटी सी नौकरी के सहारे 'समझदार' बनती है और व्यर्थ के पारिवारिक प्रतिबंधों से मुक्त होती है। माँ बेटी में आ रहे बदलाव को समझती है और थोड़ी बहुत असहमति के बावजूद उसकी खुले आकाश में उड़ान को रोकती नहीं है। भारतीय परिवारों में बेटियों के सहेली के रूप में तब्दील होने की इस सहज-सुखद प्रक्रिया के सामने 'फीमेल बांडिंग' जैसे पश्चिमी सूत्र फीके और औपचारिक लगते हैं।

'लाइन आफ कन्ट्रोल' में पारिवारिक रूढ़ियों के धीरे-धीरे टूटने की प्रक्रिया का अंकन है। छुआछूत बरतने वाली दादी बहू के विरोध के सामने झुक जाती हैं क्योंकि परिवर्तन की इच्छा कहीं न कहीं उनके मन में भी दबी पड़ी थी। अपनी रूढ़िवादिता के बावजूद दादी का चरित्र इसलिए एक प्रेरक चरित्र बन जाता है। दादी से माँ, माँ से बेटी तक परिवर्तन का यह सिलसिला दुर्गम पहाड़ी रास्तों से होकर भले ही गुज़रता हो किंतु 'लाइन ऑफ कन्ट्रोल पत्थर पर खिंची हुई लकीर थोड़े ही होती है।'

'बेताबियों का नाम इन्सा हो गया' एक उल्लेखनीय कहानी है। उसमें एक कम उम्र लड़की और चित्रकार के पारस्परिक आकर्षण को काव्यात्मक लय में रचा गया है। उम्र के अंतर के बावजूद समानता के स्तर पर बना यह रिश्ता उस दुनिया में बनता है जिसे कला की जादुई दुनिया कहते हैं, जिसमें तड़प, बेचैनी और अकेलापन है। जहाँ स्त्री पुरुष से कमज़ोर नहीं है बल्कि अहंकार के मारे पुरुष को संबल, सुरक्षा और आश्वस्ति देने वाली है।

नमिता सिंह की ज़्यादातर कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध का स्वरूप प्रायः सहज और मानवीय है। पति-पत्नी एक दूसरे के विरोधी नहीं, सहयोगी हैं। 'अलख' कहानी की नौकरानी और उसके पति, 'कूए यार' के डॉ. मेहता और सुहासिनी और 'घर चलते हैं डार्लिंग' के नीरजा और रतन के संबंध इसी सच को सामने लाते हैं। 'जितना हम किसी को देते हैं उससे कहीं ज़्यादा पाते हैं। यही तो हमारे संबंधों का आधार है, फिर देने में कृपणता कैसी।'

इन कहानियों में स्त्री विमर्श वाली कहानियों की तरह स्त्री-पुरुष संबंधों में सिर्फ संघर्ष ही नहीं दिखाया गया है बल्कि पारस्परिक सहयोग और प्रेम के आयामों को भी उभारा गया है।

सामाजिक आर्थिक संदर्भों के बदलाव से प्रभावित होने वाले माता-पिता एवं बेटों के संबंध को 'कूये यार' और 'घर चलते हैं डार्लिंग' में प्रभावी ढंग से उकेरा गया है। 'घर चलते हैं...' की माँ का मन अपने प्रिय छात्र की मृत्यु से भी उतना दुखी नहीं होता जितना अमेरिका में रह रहे अपने बेटे के लिए दुखी होता है, जो उनसे लगभग बेगाना हो चुका है। 'कूये यार का' बेटा पिता के साथ रहने के बावजूद अपनी भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं के चलते उनकी जीवन्तता को नष्ट कर देता है।

'बीस सौ इक्यावन का एक दिन' फ्यूचरिस्टिक विज़न की साइंस फिक्शन नुमा कहानी है। वैश्वीकरण की 'विजय' के परिणामस्वरूप निजी एवं विदेशी संस्थानों के प्रयासों से स्वर्ग जैसी लुभावनी दुनिया बना ली गयी है। लेकिन आधी दुनिया गरीब गोरिल्ला छापामारों की है। जैसे वे पहले गरीब थे वैसे ही अब भी ग़रीब हैं। लेकिन अब वे आक्रामक हो गए हैं। दुनिया के सुख-चैन को नष्ट करने पर आमादा ग़रीबों से ज़्यादा ख़तरनाक और क्या हो सकता है?

'मिशन जंगल' आदमी के दिमाग़ को प्रयोगों द्वारा एक मशीन में तब्दील कर देने की कोशिश को रेखांकित करने वाली कहानी है। बायोटेक्नालजी विशेषज्ञ अपने प्रयोग से भयावह परिणाम से उस समय रू-ब-रू होता है जब आज्ञाकारी बना दिए गए सैनिक, उसकी आँखों के सामने, एक साथी को मार देते हैं।

'खेल' और 'समय चक्र' के मुख्य पात्र बेरोज़गार हैं लेकिन उनके रास्ते अलग-अलग हैं। 'समय चक्र' के नायक का पतन एक दलाल संपादक के रूप में होता है जबकि 'खेल' का पात्र अपने पुश्तैनी काम को आगे बढ़ाने में लग जाता है। वस्तुतः यह एक ऐसे समाज की कहानी है जो लोगों को पैसे के बल पर नचाने की कोशिश करता है।

नमिता सिंह की अधिकांश कहानियों के पात्र सहज और विश्वसनीय लगते हैं। वे किसी सिद्धांत या विचार के सहारे नहीं गढ़े गए हैं बल्कि भारतीय समाज से उठाए गए हैं। इसीलिए वे इतने देशज और जीवंत लगते हैं। चालू फैशन से अलग रहकर भी अच्छी और बोधगम्य कहानियाँ लिखी जा सकती हैं, इन कहानियों को पढ़ते हुए यह एहसास बराबर होता है।

राजकुमार

न्यू एफ-14
हैदराबाद कॉलोनी
बी.एच.यू., वाराणसी

(कथाक्रम : अप्रैल-जून, 2010)